समाज विकासमाला

हाज़िर-जवाबी

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : ६६

हाजिर-जवाबी

कुछ मनोरंजक घटनाएं

लेखक
देवराज 'दिनेश'

सम्पादक
यशपाल जैन

१९५७
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

पाठकों से निवेदन है कि यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में उन्हें सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

पाठकों से

किसी बात का फौरन जवाब दे देना और इस ढंग से कि सुननेवाला चुप हो जाय, हाजिर-जवाबी कहलाती है। पाठक जानते हैं कि कभी-कभी ऐसा जवाब सुनकर कितना मज़ा आता है। अच्छी बात यह है कि ऐसे जवाब का मन पर असर तो होता है, पर उससे टीस नहीं उठती।

हाजिर-जवाबी के बराबर महत्व की बात है किसी भी मौके पर न घबराना और धीरज से ऐसे काम करना कि आगे चलकर हम दूसरे से सवाये साबित हों।

इस किताब में इन दोनों तरह की घटनाएं दी गई हैं। पाठकों को इन्हें पढ़कर बड़ा आनंद आयगा और मनोरंजन भी होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

—सम्पादक

हाजिर-जवाबी

किसी बात का फौरन जवाब देना और इस ढंग से, कि दूसरे आदमी से कुछ कहते न बने, आदमी का बड़ा गुण है । ऐसा आदमी कठिन-से-कठिन समय में भी इस तरह रास्ता निकाल लेता है कि दूसरे देखते रह जाते हैं। लेकिन ऐसे जवाब सूझते हैं उन्हीं लोगों को, जो घबराते नहीं हैं और हर हालत में धीरज से काम लेते हैं। ऐसे आदमी हर देश में और हर समय में होते रहे हैं । उनकी हाजिर-जवाबी की बातें सुनकर दिल उछल पड़ता है।

एक बार राम ने अंगद को रावण के दरबार में भेजा। रावण अंगद के पिता बाली के मित्र थे। इसलिए राम ने सोचा कि वह रावण को समझा-बुझाकर किसी तरह लड़ाई को रोक सकें तो बहुत अच्छा हो।

अंगद बड़े चतुर थे, पर रावण भी उनसे कम न था। अंगद के सामने आने पर रावण ने घमंड में कहा, "अंगद, मैं प्रतापी रावण हूं, मैंने अपने हाथों से बहुत बार अपने सिर काटकर शिव पर चढ़ाए हैं।"

अंगद फौरन बोल उठे, "इसमें कौन-सी बड़ी बात है! जादूगर रोज ही ऐसा तमाशा दिखाते हैं। पर उन्हें कोई महाबली नहीं कहता।"

रावण झेंप गया। बात को पलटते हुए बोला, "अंगद, मैं तुम्हारी कड़वी बातें इसलिए सह रहा हूं, क्योंकि मैं धर्म को जानता हूं।"

अंगद ने मुस्करा कर उत्तर दिया, "मेरा अहोभाग्य, जो आपके दर्शन हुए! शायद धर्म के अनुसार ही आपने दूसरे की स्त्री को हरा है?"

रावण चुप।

अंगद ने फिर कहा, "आपको भी हमारी वीरता ध्यान में रखनी चाहिए। हमने समुद्र पार कर डाला!"

रावण की चढ़ बनी। हँसकर उसने उत्तर दिया, "यह तुमने खूब कही! रोज हजारों पखेरू समुद्र पार करते हैं, पर उन्हें कोई वीर नहीं कहता।"

अंगद ने इसका जवाब और ही ढंग से दिया। उन्होंने अपना पैर रावण की सभा में जमाते हुए कहा, "अगर आपकी सभा में से कोई भी मेरा पैर उठा देगा तो रामचंद्रजी बिना लड़े ही अपनी हार मानकर लौट जायंगे।"

यह सुनकर रावण के दरबार के बलवान लोग आये, पर अंगद के पैर को कोई हिला तक न सका। यह देखकर रावण को बड़ा गुस्सा आया और वह खुद उठकर आया। अंगद जानते थे कि रावण में बड़ी ताकत है। इसलिए उन्होंने चाल चली। जैसे ही रावण ने उनके पैरों की ओर हाथ बढ़ाया, अंगद ने झट
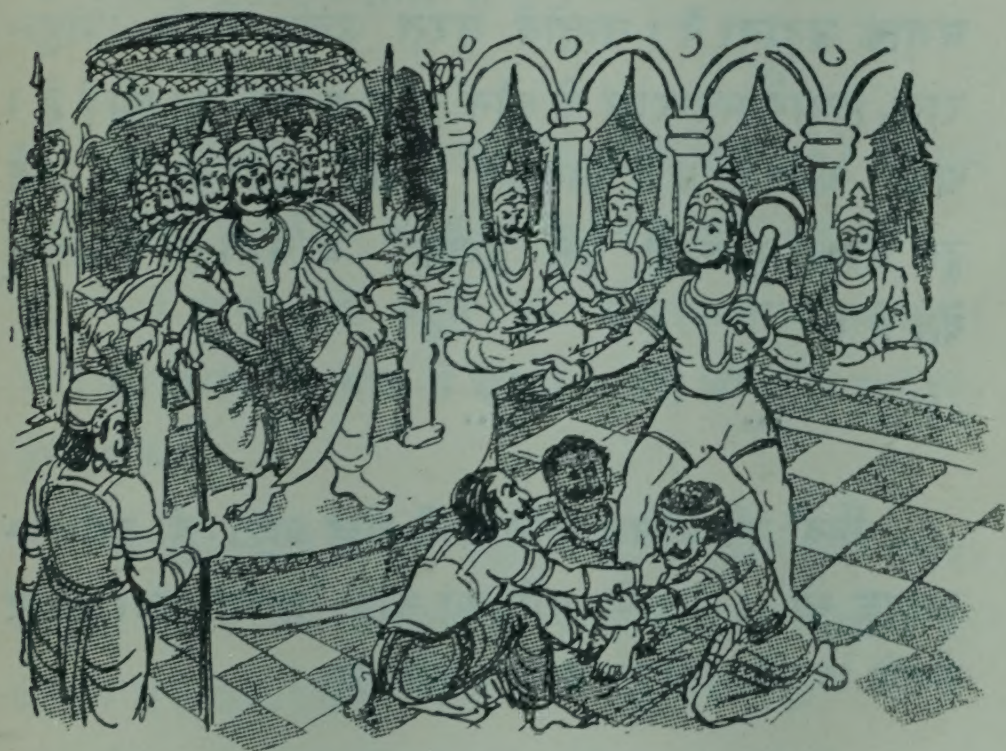
अंगद के पैर को कोई हिला तक न सका।

अपना पैर पीछे खींचते हुए कहा, "महाराज, आप मेरे पिता के मित्र हैं और मेरे लिए पिता के समान हैं। मैं यह कैसे गवारा कर सकता हूं कि आप मेरे पैर छुयें ?"

गुजरात के राजा भीमदेव के मंत्री दामोदर मेहता बड़े हाजिर-जवाब थे। एक बार वह राजा भोज की राज-सभा में राजदूत बनाये गए। वह सुंदर नहीं थे। भोज ने एक दिन मजाक में पूछा, "तुम्हारे राजा के पास तुम्हारे जैसे कितने दूत हैं?"

दामोदर समझ गए कि राजा ने उनकी शक्ल का मजाक उड़ाया है। उन्होंने तुरंत उत्तर दिया, "महाराज, हमारे महाराज ने तीन तरह के दूत रख छोड़े हैं। अच्छे, बीच के और निकम्मे। जिस राजा के यहां उन्हें दूत भेजना होता है उसे देखकर वे वैसा ही दूत भेज देते हैं।"

... ...

हिंदी की प्रसिद्ध कवियित्री शेख बहुत ही हाजिर-जवाब थी। उसके पति का नाम आलम था और उसके जहान नाम का एक लड़का था।

औरंगजेब का पुत्र शहजादा मुअज्जम बहुत ही साहित्य-प्रेमी था। एक बार उसने शेख को भेंट के लिए बुलाया। शेख मिलने गई। उससे मिलने पर मुअज्जम ने मजाक में कहा, "अच्छा, आलम की बीवी आप ही हैं।"

आलम उसके पति का नाम तो था ही, पर इस शब्द का मतलब संसार भी होता है।

शेख कहां चूकनेवाली थी ! उसने झट उत्तर दिया, "जीहां, जहान की मां मैं ही हूं।"

जहान उसके लड़के का नाम था, पर जहान का मतलब दुनिया भी होता है।

... ...

महाराजा रणजीतसिंह बड़े मजाकिया थे। बचपन में शीतला के कारण उनकी एक आंख चली गई थी।

एक बार एक बहुत ही मोटा-तगड़ा सातफुटा मिरासी उनके दरबार में आया। वह भी बड़ा हाजिर-जवाब था।

रणजीतसिंह ने उसे देखकर हँसते हुए पूछा, "मेरा खयाल है कि तुम तो कुदरत के दस्तूर को तोड़कर ही धरती पर आये होगे।"

मिरासी ने जानबूझ-कर अनजान बनते हुए कहा, "हुजूर, साफ-साफ बताइए, क्या कहना चाहते हैं।"

महाराज ने कहा, "भाई, मेरा मतलब यह है कि और लोग तो नौ महीने मां के पेट में रहते हैं, पर तुम तो शायद . . ."

मिरासी ने तुरंत उत्तर दिया, "जीहां, मेरा भी खयाल यही है हुजूर ! मैं औरों की तरह जल्दबाज नहीं था कि आंख, कान, या नाक ही वहां भूल आता !"

... ...

एक बार मिर्जा ग़ालिब बहादुरशाह जफर के साथ शाही बाग में घूम रहे थे । आम के पेड़ फलों से गदराये हुए थे। उस बाग के आम बादशाह और बेगमों के लिए ही थे ।

मिर्जा टहलते हुए बार-बार ध्यान से आमों को देखते जा रहे थे ।

बादशाह ने पूछा, "मिर्जा, इस तरह गौर से इन फलों की तरफ क्यों देख रहे हो ?"

मिर्जा ने कहा, "खास बात कुछ नहीं है, हुजूरे-आला । बुजुर्गों का कहना है कि हर दाने पर किसी-न-किसी खानेवाले का नाम लिखा होता है । मैं यही देख रहा था कि किसी दाने पर मेरा नाम भी लिखा है या नहीं ।"

... ...

एक बार एक बादशाह ने जीत की खुशी में अपने

सिपाहियों को दावत दी। खाने की तरह-तरह की चीजों के साथ शराब की सुराहियां भी भरी रखी थीं। दावत से पहले बादशाह ने कहा, "इन खाने-पीने की चीजों को आप इस तरह खत्म कर दें, जैसे अपने दुश्मनों को कर देते हैं।"

सिपाहियों ने कहा, "बहुत अच्छा।"

थोड़ी देर बाद बादशाह की नजर एक सिपाही पर पड़ी। वह शराब की सुराही चुराकर छिपा रहा था। बादशाह ने डांटते हुए कहा, "यह क्या कर रहे हो?"

सिपाही ने फौरन जवाब दिया, "हुजूर का हुक्म बजा रहा हूं। जिन दुश्मनों को हम खत्म नहीं कर पाते, उन्हें कैदी बना लेते हैं।"

... ...

जायसी का नाम पाठकों ने सुना होगा। वह कविता करते थे। उनका एक गुण यह भी था कि वह किसीके चेहरे को देखकर उसके दिल की बात जान लेते थे, पर वह बहुत ही कुरूप थे। एक बार वह अमेठी-नरेश के दरबार में गए। अमेठी-नरेश उनकी इस बदसूरती को देखकर हँसने लगे।

जायसी ताड़ गए। उन्होंने तुरन्त कहा, "मोहि हँस हि कि कोहर्राहि ?" "हे राजन, तुम मुझपर हँस रहे हो या कुम्हार पर, यानी मुझे बनानेवाले ईश्वर पर ?"

यह सुनकर अमेठी-नरेश बहुत लज्जित हुए। बाद में उन्होंने जायसी को अपना राजगुरु बनाया।

... ...

अकबर के प्रधान सेनापति मानसिंह बहुत ही बदसूरत थे। जब वह पहली बार बादशाह के सामने गए तो बादशाह नें उनकी बदसूरती पर हँसकर कहा, "मानसिंह, तुम उस समय कहां थे, जब खुदा के यहां नूर बंट रहा था ?"

मानसिंह ने फौरन उत्तर दिया, "जहांपनाह, मैं उस वक्त वहां था, जहां बहादुरी बंट रही थी।"

... ...

एक बार मिर्जा ग़ालिब से मिलने के लिए कोई साहब आये। बातचीत के बाद जब वह चलने लगे तो मिर्जा दीया लेकर दरवाजे तक पहुंचाने आये।

उन साहब ने जूता पहनते हुए कहा, "आपने नाहक इतनी तकलीफ की। मैं अपना जूता खुद ही पहन लेता।"

मिर्जा ने झट उत्तर दिया, "साहब, माफ कीजिए, मैं आपको जूता पहनाने के लिए दीया नहीं लाया,

"आप कहीं मेरे जूते न पहन जायं"

बल्कि इसलिए लाया हूं कि कहीं अंधेरे में आप मेरा जूता न पहन जायं।"

... ...

एक बार अकबर ने बीरबल से कहा, "बीरबल,

मैंने अक्सर देखा है कि अक्लमंद बाप की औलाद बेवकूफ होती है और बेवकूफ बाप की औलाद होशियार। तुम्हारा इस बारे में क्या खयाल है ?"

बीरबल ने कहा, "आप सच फरमाते हैं, जहांपनाह।"

अकबर ने मजाक में कहा, "तुम्हें इतना अक्लमंद देखकर सोचता हूं कि तुम्हारे पिता कैसे होंगे।"

बीरबल ने फौरन जवाब दिया, "मेरे पिता को तो कम ही लोग जानते थे, लेकिन आपके वालिद शहंशाह हुमायूं के बारे में दुनिया जानती है कि वह बहुत ही अक्लमंद थे।"

... ...

एक मिरासी ने एक बार महाराजा रणजीतसिंह को सलाम बजाया। उन्होंने उसे देखते ही कहा, "थोड़े में हमारे यश और रूप का वर्णन करो।"

मिरासी परेशान। सही-सही कहता तो महाराज को काना कहना पड़ता। उसने तुरंत कविता में उत्तर दिया—

इक्को अक्ख सुलक्खनी ते पई टीपां ढाले।
झुक झुक करन सलामां दो अक्खियांवाले।

यानी, अच्छे लक्षणोंवाली एक आंख की इतनी शान होती है कि उसे दो-दो आंखवाले झुक-झुककर सलाम करते हैं !

महाराज ने खुश होकर उसे पांच हजार रुपये इनाम में दिये ।

... ...

एक बार अकबर बादशाह ने अपने पीलवान से कहा, "जिन लोगों के पीछे वान लगा होता है वे निहा-

मेहरबान और पीलवान

यत मूर्ख होते हैं । जैसे कोचवान, गाड़ीवान, पीलवान । क्यों है न ?"

पीलवान ने फौरन उत्तर दिया, "जीहां, आप सच कहते हैं, मेहरवान।"

... ...

प्रसिद्ध अंग्रेज नाटककार जार्ज बर्नाड शॉ कुरूप थे, पर थे बड़े ही हाजिर-जवाब । एक बार उनके नाम से खिंचकर एक बड़ी सुंदर स्त्री ने उनसे विवाह की इच्छा प्रकट की।

शॉ ने पूछा, "इससे क्या होगा ?"

उसने कहा, "हमारी औलाद पर इसका असर पड़ेगा। वह मेरे जैसी सुंदर और आप जैसी बुद्धिमान होगी !"

शॉ ने तुरंत उत्तर दिया, "अगर वह मेरे जैसी सुंदर और तुम्हारे जैसी बुद्धिमान निकली तब क्या होगा ?"

... ...

एक बार रणजीतसिंह अपने एक खास मिरासी पर बहुत नाराज हो गए। गुस्से में बोले, "इसका सिर अभी काटकर हाजिर करो।"

मिरासी बहुत तेज था। उसने तुरंत कहा, "नजर तो नहीं आते, पर शायद हों।"

यह बात उसने ऊंची आवाज में दो-तीन बार दुहराई। दरबारी उसके मुंह की ओर ताकने लगे। महाराज ने पूछा, "क्यों, यह बार-बार क्या कह रहा है?"

वह बोला, "कोई खास बात नहीं है, महाराज! जब मैं बच्चा था तब मेरे बाप ने किसी ज्योतिषी को मेरा हाथ दिखलाया था। ज्योतिषी ने कहा था कि इसकी मौत किसी महामूर्ख के हुक्म से होगी। मैं सोच रहा था कि आप ऐसे नजर तो नहीं आते, पर ज्योतिषी की बात झूठी कैसे हो सकती है?"

कहना न होगा कि उसकी चतुराई पर खुश होकर रणजीतसिंह ने उसे फौरन छुड़वा दिया और इनाम देकर विदा किया।

... ...

एक बार एक जल्से में एक उपदेशक बड़े जोर-शोर से भाषण दे रहे थे। जनता पर रोब गांठने के लिए तरह-तरह की कहानियां सुनाते जा रहे थे। कहानियां सुनाते हुए वह बोले, "हमारे यहां एक ऐसा देवता हुआ है, जिसने सारी धरती सिर पर उठा ली थी।"

यह बात सुनते ही एक आवाज गूंजी, "धरती सिर पर उठाकर वह खड़ा कहां हुआ होगा ?"

उपदेशक भाषण देते हुए

पंडितजी कुछ जवाब दें कि तभी एक हाजिर-जवाब ने ऊंची आवाज में कहा, "अरे भाई, उसने शीर्षासन लगाया होगा। धरती अपने-आप उसके सिर पर उठ गई होगी।

... ...

एक बार दो महान लेखक आपस में मिले। उनमें एक घमंडी था, दूसरा सरल, सहृदय और हाजिर-जवाब।

सरल लेखक ने कहा, "अगर हम दोनों मिलकर एक किताब लिखें तो कैसा रहे ?"

घमंडी लेखक बोला, "वाह, यह कैसे हो सकता है ! कभी गधा और घोड़ा भी एक साथ काम कर सकते हैं ?"

सरल लेखक ने तुरंत उत्तर दिया, "क्षमा कीजिए। मुझे पहली बार मालूम हुआ कि आप अपने आपको गधा समझते हैं।"

... ...

एक जगह दो आदमी मिले। एक बहुत दुबला, दूसरा बहुत मोटा । मोटे ने हँसते हुए कहा, "आपको अगर कोई परदेसी देख ले तो यह समझेगा कि भारत में अकाल पड़ गया है !"

दुबले ने फौरन जवाब दिया, "जीहाँ, और आपको देखकर अकाल का कारण भी समझ जायगा।"

... ...

मिर्जा ग़ालिब के एक दोस्त थे, जिन्हें आम बिल्कुल पसंद नहीं थे। मिर्जा आमों के शौकीन थे।

दोनों सड़क के किनारे खड़े बातें कर रहे थे। वहीं आम का एक छिलका पड़ा था। उसी समय एक

गधा उधर से गुजरा और उसने आम के छिलके को सूंघकर छोड़ दिया।

दोस्त ने देखकर मजाक करते हुए कहा, "देखा मिर्जा, गधा भी आम नहीं खाता।"

मिर्जा ने तुरंत उत्तर दिया, "जीहां, गधा ही आम नहीं खाता।"

... ...

बादशाह अकबर के जमाने में रायप्रवीण नाम की एक स्त्री थी। वह ओरछा-नरेश इंद्रजीतसिंह की राजनर्तकी थी। बहुत ही सुंदर थी। बड़ी अच्छी कविता करती थी। उसके रूप की तारीफ सुनकर बादशाह अकबर ने उसे बुलवा भेजा। उसका विचार था कि ऐसी सुंदरी दिल्ली-दरबार की शोभा हो सकती है, पर इंद्रजीतसिंह ने उसे न भेजा। प्रवीण भी नहीं जाना चाहती थी।

इन्कार सुनकर बादशाह का पारा चढ़ गया। उन्होंने ओरछा राज्य पर तीस करोड़ का जुर्माना किया और हुक्म भेजा कि अगर प्रवीण दिल्ली-दरबार में फौरन हाजिर न हुई तो ओरछा पर हमला कर दिया जायगा।

इंद्रजीतसिंह लड़ाई के लिए तैयार थे, पर प्रवीण जानती थी कि लड़ाई का नतीजा उनके लिए अच्छा न होगा। छोटा-सा ओरछा राज्य इतनी बड़ी मुगल सल्तनत से कैसे टक्कर ले सकेगा !

वह महाराज की इजाजत लेकर दिल्ली पहुंची।

शाही दरबार में उसका नाच हुआ। बादशाह उसकी कला और छबि पर रीझ गए। नाच के बाद बादशाह ने कहा, "प्रवीण, तुम्हारी कविता की भी हमने बहुत तारीफ सुनी है। कुछ सुनाओ।"

प्रवीण तो ऐसे समय का इन्तजार कर ही रही थी। उसने तुरंत एक दोहा बनाकर सुनाया—

विनती रायप्रवीन की सुनिए शाह सुजान।
जूठी पतरी भखत हैं बारी, वायस, स्वान॥

यानी जूठी पत्तल को नीच जात के लोग, कौए और कुत्ते ही खाते हैं।

बादशाह बहुत शर्मिन्दा हुए, साथ ही उसकी होशियारी से खुश भी।

उन्होंने ओरछा राज्य का तीस करोड़ का जुरमाना माफ कर दिया और प्रवीण को बहुत-सा धन इनाम में देकर आदर से विदा किया।

... ...

एक बार बादशाह अकबर किसी जरूरी मसले पर अपने दरबारियों से सलाह कर रहे थे कि बीरबल को छींक आगई। मुल्ला दोप्यादा हमेशा उनकी कटी पर रहते थे। उन्होंने कहा, "यह क्या बदतमीजी है! असुगन कर दिया!" बादशाह भी बिगड़ गए। उन्होंने बीरबल को निकाल दिया। बीरबल घर चले आये।

दो-चार दिन बीत गए। अकबर को बीरबल के बिना चैन कहां! दरबार में तो वह आ नहीं सकते थे। सो सुबह-शाम सैर के समय बादशाह उन्हें अपने साथ ले लेते।

एक दिन सैर करते हुए वे मुल्ला दोप्यादा के महलों के सामने से गुजरे। बीरबल ने महल की दीवार के पास से मुट्ठी में मिट्टी भरकर उठाई और उसे सूंघने लगे।

बादशाह ने पूछा, "क्या बात है बीरबल? तुम यह मिट्टी क्यों सूंघ रहे हो?"

बीरबल ने कहा, "हुजूर, बरसों से जिस मिट्टी की तलाश में था, वह आज मिल गई।"

"क्या खूबी है इस मिट्टी में?" अकबर ने ताज्जुब से पूछा।

"हुजूर, इसमें मोतियों की खेती हो सकती है।" बीरबल ने जवाब दिया।

बीरबल ने कहा " मैं इसी मिट्टी की तलाश कर रहा था।"

"सच?"

"हुजूर, इस बात को आजमाकर देख सकते हैं। मगर···।"

"मगर क्या ?"

"मुल्ला दोप्यादा के महल का क्या होगा ?"

बादशाह की आंखों के आगे तो मोतियों की फसल घूम रही थी ! तुरंत बोले, "अरे, महल की बात क्या कही ! इसे गिरवा देंगे। मुल्ला को कोई दूसरा मकान

मिल जायगा। तुम कल से यहां मोती बोने की जुगत करो।"

बीरबल का तीर निशाने पर बैठा। मुल्ला का महल अगले दिन ही गिरा दिया गया। महल की जगह खेत बन गया। बीरबल ने शाही खजाने से बोने के लिए बढ़िया मोती लिये, उन्हें घर में रखा और खेत में अच्छी तरह हल चलवाकर गेहूं बो दिये।

धीरे-धीरे गेहूं जमे और कुछ दिनों में काफी बड़े होगए। बादशाह पौदों पर मोती देखने को बेचैन थे।

एक दिन बड़े तड़के बीरबल बादशाह को लेकर वहां पहुंचे। पौधों पर सफेद मोतियों की तरह ओस की प्यारी बूंदें रखी थीं।

बादशाह ने देखा तो खुशी से झूम उठे। बोले, "वाह बीरबल ! तुमने कमाल कर दिखाया।"

बीरबल ने कहा, "कमाल तो अभी होगा, हुजूर।"

बादशाह मोती तोड़ने को आगे बढ़े। बीरबल ने रोकते हुए कहा, "पहले मेरी एक बात सुन लीजिए, तब मोतियों को तोड़िए। इन मोतियों को पौधों से

वही उठा सकता है, जिसने कभी छींका न हो। अगर छींकनेवाला आदमी हाथ लगा देगा तो ये मोती पानी हो जायंगे।"

बादशाह ने उदास होकर कहा, "यह तो बड़ी परेशानी की बात है। मैंने तो जिंदगी में कई बार छींका है।"

बीरबल ने कहा, "हुजूर, शायद मुल्ला दोप्यादा ने कभी न छींका हो।"

उसी समय मुल्ला को बुलवाकर पूछा गया। उन्होंने हाथ जोड़कर कहा, "जहांपनाह, छींक कमबख्त ऐसी चीज़ है, जो रोकने पर रुकती ही नहीं। मैंने तो बहुत मरतबा छींका है।"

"बड़ा अजीब मामला है।" बादशाह ने दुखी होकर कहा।

"घबराने की कोई बात नहीं, जहांपनाह! आप महल में बेगमों, शहजादों और शहजादियों से पूछ देखें। अपने दरबारियों से भी। शायद कोई माई का लाल मिल जाय।"

दिनभर पूछताछ होती रही, पर ऐसा कोई भी इन्सान न मिला। तब हैरान होकर बादशाह ने

कहा, "अब क्या किया जाय, बीरबल !"

बीरबल ने फौरन जवाब दिया, "हुजूर, दरबारियों को दरबार से निकाल दें। बेगमों, शहजादों और शहजादियों को महलों से निकाल दें, रिआया को मुल्क से निकाल दें। और अपने लिए हुजूर खुद सोच लें !"

"तुम कहना क्या चाहते हो, बीरबल ?" बादशाह ने पूछा।

"कुछ नहीं, हुजूर। जब सभी छींकते हैं तो मैंने ही छींककर ऐसा कौन-सा गुनाह किया था कि उस पर गुस्सा होकर आपने मुझे दरबार से निकाल दिया ?"

बादशाह अपनी उस दिन की करनी पर बहुत लज्जित हुए और दूसरे दिन से बीरबल फिर दरबार में आगए।

... ...

एक बार मिर्जा बीमार हो गए। एक साहब आये और मिर्जा के पैर दबाने लगे। मिर्जा ने बहुत मना किया, पर वह न माने। इसपर वह साहब बोले, "मिर्जा-साहब, मुझे इसकी मजूरी दे देना।" मिर्जा मान

गए। जब वह महाशय उठकर चलने लगे तो उन्होंने मिर्जा से मजूरी मांगी। मिर्जा ने फौरन उत्तर
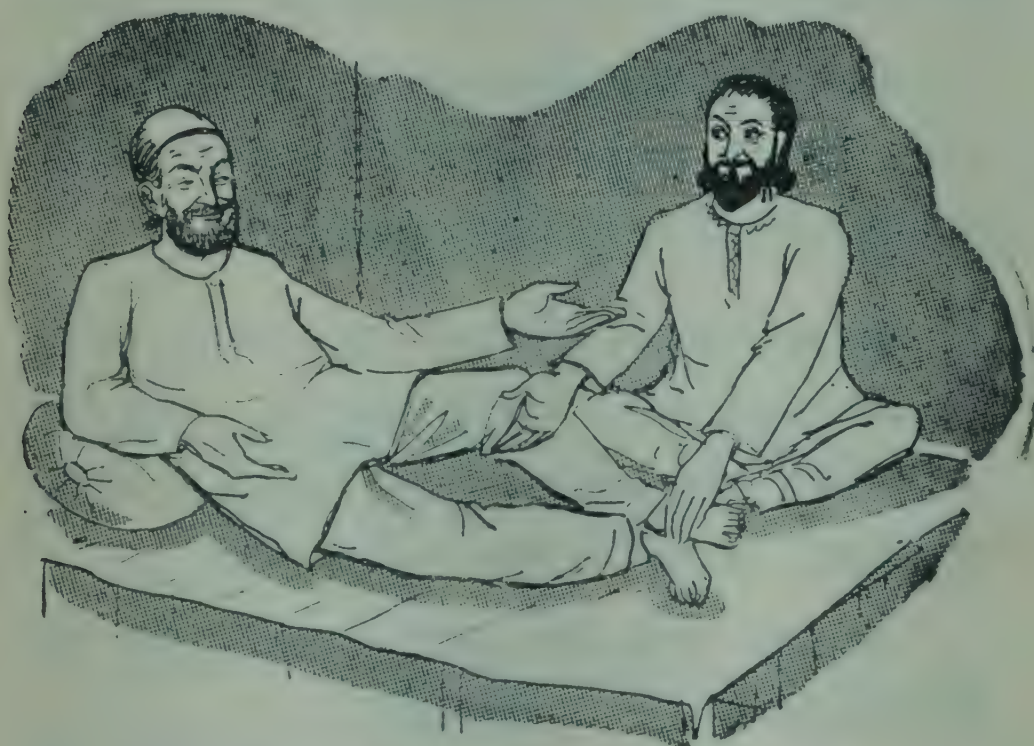
"तुमने हमारे पैर दबाये, हमने तुम्हारी मजूरी।"

दिया, "तुमने हमारे पैर दबाये, हमने तुम्हारी मजूरी दबाई, हिसाब बराबर!"

... ...

एक बार राजा विक्रमादित्य की सभा में गाना हो रहा था। सभी तरह के साज बज रहे थे। साज बजाने वाले बड़ी लगन से अपना करतब दिखा रहे थे। तभी राजा की निगाह एक बूढ़े सारंगीवाले पर पड़ी। वह

बहुत ही झूम-झूमकर अपनी सारंगी बजा रहा था। मजे की बात यह थी कि उसकी सारंगी टूटी हुई थी और उसका एक भी तार साबित नहीं था।

राजा ने यह देखा तो हैरान रह गये। गाने के खत्म होने पर उन्होंने सारंगीवाले से कहा, "बाबा, तुम अलग से हमें अपनी सारंगी सुनाओ!"

जिसमें एक भी तार नहीं था, भला वह सारंगी बज कैसे सकती थी! पर बूढ़ा चतुर था, उसने तुरंत उत्तर दिया, "महाराज, इस सारंगी की खूबी है कि यह कभी अपनी बिरादरी से अलग नहीं बजती।"

महाराज उसके इस उत्तर से बहुत प्रसन्न हुए और उसे एक नई सारंगी दिलवादी।

... ...

एक बार किसी जमींदार के पास उसके कारिंदे ने एक किसान की शिकायत करते हुए कहा, "हजूर, वह तो बड़ा ही घमंडी है। कल आपके बारे में बातें हो रही थीं। आपका नाम सुनते ही उसने चिढ़कर कहा—"मैं तो उन्हें अपना गधा भी नहीं समझता।"

यह सुनकर जमींदार को बड़ा ताव आया। उसने

तुरंत उस किसान को बुलाया और डांटकर पूछा, "क्यों बे, इस कारिंदे का कहना है कि तू मुझे अपना गधा भी नहीं समझता !"

किसान ने बड़े भोले-भाले ढंग से उत्तर दिया, "समझता हूं, हजूर !"

जमींदार ने अचानक बात समझी और झेंपकर रह गया।

... ...

एक बार कहीं डाक्टरों की सभा हो रही थी। उसमें पशुओं के एक डाक्टर भी आये हुए थे। वह ऊंचा बोलने के आदी थे।

सभापति ने खीझकर कहा, "लगता है कि आप डंगर-डाक्टर हैं।"

डाक्टर ने तुरंत उत्तर दिया, "जीहां, मैं बखूबी आपका इलाज कर सकता हूं।"

... ...

हमारे गांव के मिरासी जुम्मनमियां बड़े ही हाजिर-जवाब थे। एक बार हमारे साथ रेल में सफर कर रहे थे। उनका अजीब-सा पहनावा देखकर सफर करनेवाले शहरी लोगों को उनसे मजाक करने की सूझी। एक बने-ठने बाबू उनसे बोले, "बुरा न

मानियेगा, मियांसाहब। आपकी शक्ल-सूरत से ऐसा मालूम होता है, जैसे आप मिरासी हों!"

जुम्मन ने झट उत्तर दिया, "बुरा क्यों मानूंगा। मैं खान्दानी मिरासी हूं।"

बाबूसाहब ने चोट की, "अच्छा, तो क्या मिरासी भी खानदानी होते हैं?"

जुम्मन कब चूकने वाले थे। बोले, "जीहां, इस जमाने में मिरासी ही खानदानी रह गए हैं।"

एक दूसरे बाबू साहब ने जुम्मनमियां से कहा, "तब तो आपके बहुत से लतीफे होंगे । कोई सुनाइएगा?"

जुम्मनमियां ने लम्बी सांस भरकर उत्तर दिया, "अब हम गांववालों के पास लतीफे कहां! वह तो सब शहरों में जाकर बस गए हैं।"

यह सुनकर गाड़ी में बैठे सभी आदमी खिलखिला कर हँस पड़े।

कुछ देर तक सब चुप रहे। फिर तीसरे बाबूसाहब ने कहा, "रास्ता बातों-बातों में कट जाय, इसलिए आओ, कुछ पहेलियां बुझावें।"

जुम्मनमियां ने कहा, "कोई हर्ज नहीं है, पर शर्त बद कर।"

शहरी ने कहा, "मंजूर है। जो पहेली न बूझ सके वह अपनी हार मानकर पहेली बुझानेवाले को दस रुपये दे।"

जुम्मनमियां ने झट उत्तर दिया, "यह बात नहीं। आप ठहरे पढ़े-लिखे और मैं हूं गांव का गंवार। आप हारेंगे तो दस रुपये देंगे और मैं हारूंगा तो पांच रुपये दूंगा!"

शहरीबाबू मान गए और बोले, "अच्छा, तो पहले आप पहेली कहिए।"

जुम्मन ने कहा, "दो सिर, छः हाथ और दस पैर वाली चिड़िया का नाम बताइए?"

शहरी सुनकर सकपका गए। बहुत देर तक सोच कर बोले, "मुझे नहीं मालूम।"

"जुम्मन ने कहा, "अच्छा तो लाइए दस का नोट।"

शहरी बाबू ने दस का नोट दे दिया और कहा, "अच्छा, अब आप ही बताइए--दो सिर छः हाथ और दस पैर वाली चिड़िया का नाम क्या है?"

जुम्मन ने पांच का नोट उनकी ओर बढ़ाते हुए कहा, "मैं भी नहीं जानता। लीजिए शर्त हारने के पांच रुपये।"

यह सुनकर सब मुसाफिर हँस पड़े। बिना बात जुम्मनमियां पांच रुपये शहरी से ले गए।

... ...

एक बार कुछ लेखक आपस में बैठकर बातें कर रहे थे। चर्चा हो रही थी कि कौन अपनी कहानी का मसाला कब और कहां बैठकर सोचते हैं।

एक ने कहा, "मैं समुद्र-किनारे बैठ जाता हूं और उसके पानी में अपने पैर डालकर उसकी लहरों को गिनते हुए सोचता हूं।"

दूसरे ने कहा, "तभी आपकी कहानियों में मिठास न होकर खारापन होता है।"

इस पर पहले ने पूछा, "आप कहां बैठकर सोचते हैं ?"

दूसरे ने जवाब दिया, "सुबह के वक्त पाखाने में बैठकर।"

पहले ने झट उत्तर दिया, "तभी आपकी कहानियों में बदबू आती है।"

समाज विकास - माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी - मानस - मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी - जीवन
७०. मूरखराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक

मूल्य प्रत्येक का छः आना

सस्ता साहित्य मण्डल

छः आना